भारतीय दर्शन में विदुर नीति

डॉ. ब्रज किशोर

Associate professor, Government girls' College, Ajmer

सार

विदुर नीति भारतीय दर्शन, राजनीति और नैतिक जीवन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ है। यह महाभारत के उद्योग पर्व (अध्याय 33 से 40 तक) का हिस्सा है, जिसमें महात्मा विदुर और हस्तिनापुर के महाराज धृतराष्ट्र के बीच संवाद का वर्णन है। [1, 2, 3]

विदुर नीति का सार और प्रमुख विषय

- स्रोत और पृष्ठभूमि: महाभारत युद्ध से ठीक पहले, जब अनिर्णय और पुत्रमोह में फंसे राजा धृतराष्ट्र को रात में नींद नहीं आ रही थी, तब उन्होंने विदुर को बुलाकर धर्म, नीति और राज्य-व्यवस्था पर उपदेश देने को कहा। [1, 2, 3]
- धर्म और सत्य का पालन: विदुर नीति मनुष्य को हमेशा धर्म, सत्य और सदाचार के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है। इसमें बताया गया है कि अधर्म से प्राप्त किया गया धन और सुख अस्थायी होता है। [1, 2, 3]
- बुद्धिमान व्यक्ति (पंडित) के लक्षण: विदुर के अनुसार, वह व्यक्ति बुद्धिमान (पंडित) है जो अपने कर्तव्यों को जानता है, समय के अनुसार कार्य करता है, क्रोध और घमंड से दूर रहता है और हर परिस्थिति में संयम बनाए रखता है। [1]
- राजधर्म और सुशासन: एक राजा या शासक के लिए प्रजा की रक्षा, निष्पक्ष न्याय, लोभ और अहंकार का त्याग तथा योग्य और ईमानदार मंत्रियों की सलाह को सर्वोपरि माना गया है। [1, 2]
- जीवन प्रबंधन और शत्रु-मित्र की पहचान: इसमें यह भी सिखाया गया है कि अच्छे मित्रों की पहचान कैसे करें, वाणी पर नियंत्रण कैसे रखें, अहंकार और आलस्य का त्याग कैसे करें और संकट के समय में सही निर्णय कैसे लें। [1]

परिचय

विदुर-नीति महाभारत का एक अत्यन्त प्रसिद्ध और परम उपयोगी प्रसंग है। भारतीय ज्ञान परंपरा में नीतिशास्त्र के अन्तर्गत विदुर नीति का विशेष महत्व है। इसमें इन्होंने लोक-परलोक में कल्याण करने वाली बहुत सी बातें कही हैं। विदुर जी की नीति में व्यवहार, नीति, सदाचार, धर्म, न्याय, सत्य, अहिंसा आदि सभी कुछ आ जाता है। विदुर नीति नीति शास्त्र में एक प्रतिष्ठित और महत्वपूर्ण स्थान रखती है। धर्म के अवतार महात्मा विदुर अत्यन्त बुद्धिमान, धर्मज्ञ, ईश्वर भक्त, नीतिनिपुण व व्यवहार कुशल थे। महात्मा विदुर ने राज्य-शासन की नीति से सम्बन्धित अनेक बातें कही हैं, जो आज भी हमारे लिए वैसी ही लाभदायक हैं। महाभारत में उद्योग पर्व के 33वें से 44वें अध्याय तक नीति सम्बन्धी उपदेश संग्रहित हैं इसमें महात्मा विदुर ने राजा धृतराष्ट्र को लोक परलोक की बहुत सी बातें बतायी हैं। विदुर नीति में उन सिद्धांतों और नीतियों का वर्णन किया गया है जिन्हें किसी भी राजा, शासक या सामान्य व्यक्ति को अपने जीवन में अपनाना चाहिए।

महात्मा विदुर धृतराष्ट्र और पाण्डु के छोटे भ्राता थे, ये दासी पुत्र थे इस कारण ये राज्य के अधिकारी नहीं हुए। पाण्डु की मृत्यु के पश्चात् जब धृतराष्ट्र राजा बने तब ये उनके मंत्री बने। विदुर नीति के तो पंडित थे ही इनकी बनायी गई विदुर नीति एक प्रामाणिक नीति मानी गई –

महात्मा विदुर ने इस संकटापन्न वेला में भी महाराज धृतराष्ट्र को नीति का ज्ञान दिया। महाभारत के उद्योग पर्व के अन्तर्गत प्रजागर पर्व के रूप में आठ अध्यायों में यह उपदेश वर्णित है। यही उपदेश विदुर नीति के नाम से विख्यात है। महाभारत में विदुर ने समय–समय पर और भी नीति वचन कहे हैं, किन्तु महाभारत का चालीसवां अध्याय ही विदुर नीति के रूप में प्रसिद्ध है।[1,2,3]

नीति निपुण विदुर सदा धर्म के पक्ष में रहते अधर्म का खण्डन तो ये सभा के मध्य भी कर देते थे। पाण्डवों को जब बारह वर्ष का वनवास और एक वर्ष का अज्ञातवास हुआ तो ये बड़े दुःखी हुए। विदुर जानते थे कि युद्ध विनाशकारी होगा, क्योंकि महाराज धृतराष्ट्र तो अपने पुत्र मोह में इस प्रकार बंध चुके थे कि वे कोई समाधान नहीं खोज पा रहे थे। दुर्योधन अपनी जिद पर अड़ा था। द्यूत क्रीडा की शर्त के अनुसार पांडवों ने बारह वर्ष का वनवास और एक वर्ष का अज्ञातवास पूर्ण करने के बाद जब अपना राज्य वापस मांगा तो पुत्र मोह में बँधे धृतराष्ट्र उन्हें कोई निर्णायक उत्तर नहीं दे पाये। द्यूत क्रीडा के समय भी विदुर ने धृतराष्ट्र को चेतावनी दी थी कि यदि यह खेल समाप्त नहीं किया गया तो अनर्थ हो जायेगा और हस्तिनापुर को विनाश की कगार से कोई नहीं बचा सकता। विदुर नीति युद्ध की नीति न होकर जीवन में प्रेम व्यवहार की नीति के रूप में अपना विशेष स्थान रखती है। जिस प्रकार चाणक्य नीति राजनीतिज्ञ सिद्धान्तों से ओत प्रोत है वहीं विदुर नीति सत् असत् की दृष्टि से विशेष महत्त्व रखती है। विदुर सदा सत् विचारों का ही परामर्श देते। देखा जाय तो महाराज धृतराष्ट्र और विदुर के बीच ये कैसा संयोग था धृतराष्ट्र अपने पुत्र मोह में फंसे थे इसके विपरीत विदुर अपनी नीति में बँधे हुए थे। जब महाभारत का युद्ध प्रारम्भ हुआ तो ये किसी तरफ भी नहीं हुए, लेकिन मन से ये सदा पांडवों के पक्ष में थे और समय समय पर उन्होंने पांडवों की सहायता की तथा उन्हें कई विपत्तियों से भी बचाया।[1]

विदुर जी कि नीति में व्यवहार, नीति, सदाचार, धर्म, न्याय, सत्य, अहिंसा आदि सभी कुछ आ जाता है। विदुर के व्यक्तित्व का कितना सम्मान था ये उनके लिये प्रयुक्त संबोधनों से भी प्रकट है –

महाप्राज्ञं , दीर्घदर्शिनः (श्लो० 1.5)

त्वमेक प्रज्ञासम्मतः (1.15)

धर्मार्थ कुशलः (2.1)

महाबुद्धे (3.1)

महामते (4.50)

इन विशेषणों से ही स्पष्ट है कि विदुर परम विद्वान , दूर तक की सोचने वाले , राजनीति – धर्मनीति को भली–भांति जानने वाले , उदार चित्त , एकमात्र महाबुद्धिमान और महामतिवान थे। इतने गुणों से सम्पन्न विदुर ने धृतराष्ट्र को यह नीति–उपदेश ही नहीं दिया किन्तु राजघराने की समस्याओं को भी सुलझाया –[2]

पांडवों की कठिन परिस्थितियों में उनमें वह लगन भी पैदा की जिससे प्रत्येक पांडुपुत्र अपने–अपने क्षेत्र में आर्यावर्त का सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति सिद्ध हुआ।

लाक्षागृह के षड्यन्त्र से पांडवों को विदुर ने ही बचाया था।

धृतराष्ट्र के सलाहकार एवं पाण्डवों के हितरक्षक थे।

जनमत की प्रबलता को आधार बनाकर पुत्रमोह में फंसे धृतराष्ट्र को – पांडवों को कुलवधू द्रौपदी एवं माता कुंती के साथ हस्तिनापुर बुलाया जाए और पूर्ण औपचारिकता के साथ उनका स्वागत किया जाए , जिसे विदुर जी ने पूरा किया।

वे आदि से अंत तक कुरु राज्य के प्रति निष्ठावान् रहे , किन्तु इसके साथ ही सदैव निर्भीक होकर धर्म का पक्ष लेते रहे।

युद्ध टालने का अंतिम प्रयास करने के लिए पांडवों के दूत बनकर आए “श्री कृष्ण’’ ने कुरु राजमहल का आतिथ्य स्वीकार न करके विदुर के यहां ठहरना उचित समझा। इसीलिए आचार्य विदुर महात्मा विदुर माने जाते हैं। इस प्रकार कुरु राजघराने की समस्याओं के अंगस्वरूप महात्मा विदुर का जन्म हुआ और वह आजीवन कुरु राजघराने की समस्याओं को सुलझाने का प्रयास करते रहे। इस प्रकार महात्मा विदुर ने आजीवन नीतिशास्त्र का पालन किया।[2,3,4]

विचार–विमर्श

विदुर नीति महाभारत महाकाव्य में विदुर द्वारा दिए गए ज्ञान, नैतिकता और शासन कला के उपदेशों का संग्रह है। विदुर कुरु परिवार की दोनों शाखाओं के बुद्धिमान मंत्री और चाचा थे, और उनके वचन भ्रम, प्रलोभन और संघर्ष से भरी दुनिया में ईमानदारी से जीने और सही राह देखने का व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। रहस्यवादी दर्शनों के विपरीत, विदुर नीति सीधे आम जीवन से जुड़ी हैः मित्र कैसे चुनें, धन का प्रबंधन कैसे करें, दूसरों को ठेस पहुंचाए बिना सच कैसे बोलें, और जब परिस्थितियाँ आपको अपने उद्देश्य से दूर धकेल रही हों तब भी उस पर कैसे अडिग रहें।

विदुर राजा धृतराष्ट्र के सौतेले भाई और पांडवों एवं कौरवों के मामा थे। उनकी माता एक दासी थीं, जिससे वे राजा के पुत्र की तुलना में निम्न कुल के थे, फिर भी उनकी बुद्धिमत्ता और ईमानदारी ने उन्हें वह स्वर दिया जिसे पूरा दरबार सुनता था। महाभारत में, वे ऐसी चेतावनियाँ देते हैं जिन पर ध्यान नहीं दिया जाता—कौरवों की ईर्ष्या को बढ़ने देने के खतरों के बारे में, और उस जुए के खेल के अन्याय के बारे में जिससे युद्ध शुरू हुआ। वे एक ऐसी कहानी में नैतिक स्पष्टता के प्रतीक हैं जहाँ अधिकांश पात्र कर्तव्य, इच्छा या भाग्य के जाल में फँसे हुए हैं। उनके उपदेश महाकाव्य में उपदेशों के रूप में नहीं, बल्कि संकट के क्षणों में दी गई सलाह के रूप में बुने गए हैं, जब परिस्थितियाँ सबसे गंभीर होती हैं और ईमानदार मार्गदर्शन की सबसे अधिक आवश्यकता होती है। विदुर को अक्सर विवेक का प्रतीक कहा जाता है—घटनाओं की सतह के नीचे छिपे वास्तविक अर्थ को देखने की क्षमता।

विदुर की बुद्धिमत्ता कुछ अटल सिद्धांतों पर टिकी है। पहला है धर्म की सर्वोच्चता—वह कर्तव्य और सत्य जो परिवार, समाज और ब्रह्मांड को संतुलन में रखता है। विदुर के अनुसार, धर्म केवल नियमों का एक समूह नहीं है जिसका अंधाधुंध पालन किया जाए, बल्कि यह वह है जिसे समझना और चुनना आवश्यक है, भले ही इसके लिए आपको कुछ कीमत चुकानी पड़े। वे सिखाते हैं कि एक सत्यनिष्ठ व्यक्ति सही कार्य इसलिए करता है क्योंकि वह सही है, न कि इसलिए कि दूसरे उसे देख रहे हैं या इससे उसे कोई लाभ मिलेगा।

दूसरा स्तंभ आत्मज्ञान है। विदुर बार-बार अपने स्वभाव, अपनी शक्तियों और अपनी सीमाओं को जानने के महत्व पर बल देते हैं। वे सिखाते हैं कि जो व्यक्ति स्वयं को जानता है, उसे गुमराह करना या भ्रष्ट करना कठिन होता है। यह आत्मविचार, यानी स्वयं की खोज, से जुड़ा है, जो कई हिंदू दार्शनिक परंपराओं का मूल है।

तीसरा स्तंभ रिश्तों में विवेक है। विदुरा सिखाते हैं कि आप अपने आस-पास के लोगों से प्रभावित होते हैं: अपने दोस्तों को ध्यान से चुनें, चापलूसों से सावधान रहें, ऐसे लोगों की तलाश करें जो आपको कड़वी सच्चाई बताएं न कि वो जो आप सुनना चाहते हैं। वे जानते हैं कि अकेलापन गलत निर्णय लेने की क्षमता को जन्म देता है, लेकिन साथ ही ऐसे लोगों से घिरे रहना भी नुकसानदायक होता है जिनमें आपका विरोध करने का साहस नहीं होता। वे कहते हैं कि सच्चा दोस्त वही होता है जो सही समय पर कड़वी सच्चाई बोलता है।

इन व्यापक सिद्धांतों के अलावा, विदुर नीति ठोस मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। वे आसक्ति और लोभ के खतरों के बारे में सिखाते हैं—कि कैसे धन और प्रतिष्ठा की लालसा लोगों को अपनी और दूसरों की गरिमा के प्रति अंधा कर देती है। वे वाणी के उचित प्रयोग पर बल देते हैं: शब्द एक उपकरण हैं, और किसी भी उपकरण की तरह, वे आपके प्रयोग के आधार पर हानि या लाभ पहुंचा सकते हैं। सत्य महत्वपूर्ण है, लेकिन समय और लहजा भी उतना ही महत्वपूर्ण है; गलत समय पर कठोर स्वर में बोला गया सत्य स्वयं एक प्रकार की क्रूरता है।[3,4,5]

विदुरा धैर्य और समय के महत्व के बारे में भी सिखाते हैं। वे जल्दबाजी में कोई कदम उठाने से, क्रोध या इच्छा को अपने ऊपर हावी होने देने से बचने की चेतावनी देते हैं, ताकि आप ऐसे निर्णय न लें जिनका आपको बाद में पछतावा हो। फिर भी वे निष्क्रियता की सलाह नहीं देते; उनका कहना है कि भावनाओं के बजाय स्पष्टता से कार्य करना चाहिए, किसी भी कदम उठाने से पहले स्थिति के पूरे स्वरूप को समझना चाहिए। सही समय की प्रतीक्षा करने और सही समय आने पर निर्णायक रूप से कार्य करने के बीच का यह संतुलन उनकी सभी शिक्षाओं का मूल आधार है।

वे धन और शक्ति की सीमाओं के बारे में स्पष्ट रूप से बात करते हैं। भौतिक सफलता व्यर्थ नहीं है—एक व्यक्ति को गरिमापूर्ण जीवन जीने के लिए सुरक्षा और पर्याप्त संसाधनों की आवश्यकता होती है—लेकिन यह एक सार्थक जीवन का केंद्र नहीं है। जो व्यक्ति धन को मूल्य समझ लेता है, या जो यह मानता है कि अधिक धन होने से अंततः उसे संतुष्टि मिलेगी, वह ऐसी चीज का पीछा कर रहा है जो हमेशा उससे दूर रहेगी। विदुरा सिखाते हैं कि संतुष्टि आपके मूल्यों के अनुरूप जीवन जीने से आती है, न कि आपके बैंक खाते के आकार से।

विदुर नीति आज भी इतनी प्रासंगिक क्यों है? क्योंकि यह उन विकल्पों की बात करती है जिनका सामना हम वास्तव में करते हैं। महाभारत के पात्र दूर के मिथक नहीं हैं; वे ऐसे लोग हैं जो कर्तव्य और इच्छा के बीच, अपने विश्वास और अपने प्रलोभनों के बीच फंसे हुए हैं। विदुर की सलाह हमारे लिए भी उतनी ही महत्वपूर्ण है, क्योंकि इन दुविधाओं का स्वरूप आज भी वैसा ही है।

विदुर नीति आपको दूसरों की नकल करने के बजाय स्वयं सोचने की शिक्षा देती है। वे आपको अपने आस-पास के लोगों और उनके प्रभाव पर ध्यान देने की शिक्षा देते हैं। वे आपको अपने स्वभाव के प्रति ईमानदार रहने की शिक्षा देते हैं, न कि वह बनने का दिखावा करने की जो आप नहीं हैं। ये कोई रहस्यमयी बातें नहीं हैं; ये आपके वर्तमान जीवन पर अधिक ध्यान देने के तरीके हैं। जब आप विदुर नीति पढ़ते हैं, तो आपसे किसी नई विचारधारा को अपनाने के लिए नहीं कहा जा रहा है, बल्कि आपके पास पहले से मौजूद ज्ञान को और निखारने के लिए कहा जा रहा है।

उनकी शिक्षाएं आधुनिक जीवन में अलगाव और अकेलेपन की समस्या पर भी प्रकाश डालती हैं। विदुरा उन लोगों को खोजने के महत्व पर बल देते हैं जिन पर आप भरोसा कर सकते हैं, जो आपको पूरी तरह से जानते हैं और आपको सच बताएंगे। ऐसी दुनिया में जहां हम कई संबंधों से घिरे होने के बावजूद भी गहरे अकेलेपन का अनुभव करते हैं, वहां सच्चे रिश्तों पर उनका जोर विशेष महत्व रखता है। वे हमें याद दिलाते हैं कि हमें अन्य लोगों की आवश्यकता है – प्रतिष्ठा या सुविधा के लिए नहीं, बल्कि इसलिए कि एकांत में स्पष्ट चिंतन लगभग असंभव है।[4,5,6]

विदुर नीति गृहस्थी और राज्य के संदर्भ में आधारित है, न कि तपस्वी के वनवास के संदर्भ में। विदुर आपको संसार त्यागने की शिक्षा नहीं दे रहे हैं, बल्कि इसमें विवेकपूर्ण जीवन जीने की शिक्षा दे रहे हैं। उनकी सलाह में यह मानकर चला जाता है कि आपके पास परिवार, मित्र, जिम्मेदारियाँ, धन प्रबंधन और निर्णय लेने की ज़िम्मेदारी है। इस अर्थ में, यह अन्य हिंदू ज्ञान परंपराओं का पूरक है, न कि उनसे प्रतिस्पर्धा। वेदांत का अध्ययन करने वाला या भक्ति का अभ्यास करने वाला व्यक्ति भी विदुर की व्यावहारिक अंतर्दृष्टि से लाभान्वित हो सकता है।

इसमें प्रत्यक्ष और प्रत्यक्ष ज्ञान पर ज़ोर दिया गया है। विदुरा अमूर्त तर्कों के बजाय दुनिया के वास्तविक कामकाज के अवलोकन के माध्यम से शिक्षा देते हैं। वे कहते हैं: चापलूसों से घिरे लोगों का हाल देखो, और तुम्हें समझ आ जाएगा कि यह कितना खतरनाक है। अपनी इच्छाओं को वास्तविकता समझ लेने वाले लोगों का हाल देखो, और तुम्हें आत्मज्ञान का महत्व समझ आ जाएगा। अवलोकन पर आधारित यह ज्ञान उनके उपदेशों को शाश्वत स्पष्टता प्रदान करता है।

परिणाम

विदुर नीति महाभारत के पांचवें पर्व, उद्योग पर्व में वर्णित उपदेशों का एक समूह है। 'उद्योग' का अर्थ है प्रयास और तैयारी। यह पांचवां पर्व कुरुक्षेत्र के महान युद्ध से पहले के महत्वपूर्ण दिनों में वर्णित है। ऐसे समय में, विदुर रात के समय राजा धृतराष्ट्र को संबोधित करते हुए शासन और जीवन के सिद्धांतों पर सलाह देते हैं।

इसमें चार प्रमुख सिद्धांत शामिल हैं:

1. शासन के सिद्धांत

2. नैतिकता – सुविधा और धार्मिकता के बीच का अंतर

3. अनुशासन – दूसरों का मार्गदर्शन करने से पहले स्वयं को कैसे नियंत्रित करना चाहिए

4. नेतृत्व – अपने आश्रितों की जिम्मेदारी लेने का क्या अर्थ है?

यह एक ऋषि द्वारा एक अपरिपक्व राजा को दी गई उचित और मानवीय सलाह है, जिसे उस विशेष समय में किसी और से अधिक ऐसी सलाह की आवश्यकता होती है; इसलिए, विदुर नीति समकालीन युग के लिए प्रासंगिक है।

विदुरा द्वारा मनोवैज्ञानिक अंतर्दृष्टि – भीतर का दुश्मन

विदुरा ने तीन आंतरिक कमजोरियों का उल्लेख किया है जो व्यक्ति को "भीतर शत्रु" बनने के लिए प्रवण बनाती हैं। लोभ, क्रोध और मद के विश्लेषण के माध्यम से, विदुरा व्यक्तिगत कमजोरी की व्याख्या करते हैं और नियामक तंत्र के रूप में कुछ गुणों का सुझाव देते हैं।[5,6,7]

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः।

कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेत्तत्रयं त्यजेत्॥

(भगवद-गीता सी-16, श्लोक 21)

- लोभ (लालच) बनाम तोष (संतोष)

लोभ का अर्थ केवल धन की लालसा नहीं है। विदुर के अनुसार, यह धन, यश, प्रतिष्ठा या शक्ति जैसी किसी भी चीज़ का प्रतीक हो, कभी न खत्म होने वाली संपत्ति की भूख को दर्शाता है। इस लालसा से ग्रस्त व्यक्ति तर्क के बजाय भावनाओं के आधार पर कार्य करता है, और केवल अपनी इच्छाओं से प्रेरित होता है। अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए, पुरुष या स्त्री क्षणिक सुख के लिए अपने मूल्यों का त्याग करने को भी तैयार रहते हैं।

विदुरा द्वारा अनुशंसित तोशा, एक ऐसी अवस्था है जब व्यक्ति अपनी स्थिति से पूर्णतः संतुष्ट होता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि व्यक्ति में कोई महत्वाकांक्षा नहीं होती; इसका अर्थ केवल यह है कि यह संतोष की अवस्था तब प्राप्त होती है जब व्यक्ति को यह एहसास हो जाता है कि क्या आवश्यक है और क्या लालच का परिणाम है। इसी प्रकार, तोशा को अपनाने वाला नेता स्पष्ट रूप से सोच सकेगा, ठीक इसी कारण से कि उसमें कोई लालसा नहीं होती।

- क्रोध (क्रोध) बनाम क्षमा (क्षमा)

जब विदुर क्रोध का वर्णन करते हैं, तो उनके शब्दों में एक गंभीरता झलकती है। क्रोध आग के समान है, लेकिन क्रोध का पहला शिकार हमेशा वही व्यक्ति होता है जो इस भावना को महसूस करता है। क्रोध की अवस्था में प्रवेश करते ही व्यक्ति की सोचने-समझने की क्षमता समाप्त हो जाती है, जिसके कारण वह बिना सोचे-समझे जल्दबाजी में व्यवहार करता है और बाद में पश्चाताप करने की कोई गुंजाइश नहीं बचती।

विदुरा किसी को भी अपनी भावनाओं को दबाने की सलाह नहीं देते; इसके विपरीत, वे क्षमा के मार्ग का अनुसरण करने की सलाह देते हैं – यानी धैर्य और क्षमा का मार्ग।

आज की दुनिया में, क्रोध प्रबंधन के प्रति प्रतिक्रियात्मक दृष्टिकोण का रूप ले लेता है – संदेश का अर्थ समझे बिना ही उस पर प्रतिक्रिया देना और क्रोधित होकर कार्मिक संबंधी कार्रवाई करना।[6,7]

- मद (अहंकार/भ्रम) बनाम विनय (विनम्रता/अनुशासन)

इन तीनों में से, शायद मदा को सबसे विषैला माना जा सकता है क्योंकि यह स्वामी को दिखाई नहीं देता। मदा शक्ति की झूठी अनुभूति या पिछले अनुभव और प्राप्त पद के आधार पर कभी गलती न करने के भ्रम को दर्शाता है। मदा से प्रभावित नेता सुनना और सीखना बंद कर देता है, जिससे वह ऐसा वातावरण बनाता है जो हमेशा उसके कार्यों से सहमत होता है।

विनय, जिसे विदुर ने विनम्रता के रूप में परिभाषित किया है, मद का प्रतिकार है। विनय में इस विचार को स्वीकार करना शामिल है कि ज्ञान खुले मन से प्राप्त होता है, इसलिए यह स्वीकार करना कि चर्चा में जो अधिक बुद्धिमान व्यक्ति है उसने पहले अपनी गलती स्वीकार कर ली होगी। संस्कृत में, विनय अनुशासन और विद्या की अवधारणाओं से भी संबंधित है।

आज माडा को एक ऐसे नेता के रूप में देखा जा सकता है जो अब और कुछ सीखने से इनकार करता है, किसी भी बात पर सवाल उठाने से इनकार करता है, किसी भी आलोचना को स्वीकार नहीं करता है, और पिछली सफलताओं के आधार पर खुद को ज्ञानी मानता है।

आधुनिक प्रणालियों में विदुरणीति की कार्यात्मक प्रासंगिकता

विदुरनीति व्यक्तिगत और प्रणालीगत दोनों स्तरों पर संतुलन स्थापित करने के लिए एक उन्नत प्रणाली प्रस्तुत करती है, जिसमें नियंत्रण का स्रोत बाहरी के बजाय आंतरिक होता है। इस प्रणाली का सार पंडित को परिभाषित करने में निहित है, जो एक योग्यता-आधारित आदर्श है और किसी भी सामाजिक-वंशानुगत स्थिति की परवाह किए बिना संतुलन स्थापित कर सकता है। व्यक्तिगत संतुलन दो प्रकार का है: एक ओर, यह पर्यावरणीय लचीलेपन को संदर्भित करता है, जिसके द्वारा व्यक्ति द्वंद्वों या विरोधी द्वैत (शीत/शीत बनाम उष्ण/गर्मी) से "प्रभावित" नहीं होता है; और दूसरी ओर, मनोवैज्ञानिक समभाव को, जो यह सुनिश्चित करता है कि क्रोध और गर्व धर्म, अर्थात् कार्यात्मक कर्तव्य में बाधा उत्पन्न न करें।

इसके अतिरिक्त, विदुरा प्रणालीगत दक्षता को दीर्घसूत्रता (टालमटोल) जैसे “परिचालनात्मक घर्षण” की अनुपस्थिति के रूप में परिभाषित करते हैं। प्रणाली की अखंडता को बनाए रखने के लिए सूचना की सत्यता को अत्यंत महत्वपूर्ण स्तर पर रखा जाता है, जैसा कि अप्रिय लेकिन उपयोगी सत्य – अप्रिय लेकिन उपयोगी सत्य – को व्यक्त करने की आवश्यकता से स्पष्ट होता है। इसे एक प्राचीन प्रतिक्रिया तंत्र के रूप में देखा जा सकता है जो नेताओं के बीच “प्रतिध्वनि कक्षों” के कारण प्रणाली के टूटने को रोकता है।

व्यक्तिगत स्तर पर व्यावहारिक कार्यान्वयन[6]

1. दैनिक आत्मचिंतन – स्वाध्याय

- विदुर धृतराष्ट्र को बार-बार बताते हैं कि जो व्यक्ति अपने कर्मों, इच्छाओं और उद्देश्यों की जाँच नहीं करता, वह पहले से ही विनाश के मार्ग पर है (महाभारत, उद्योग पर्व, अध्याय 33-40)।
- तैत्तिरीय उपनिषद 1.9.1 में स्वाध्याय को एक व्यक्तिगत नियम के रूप में "स्वाध्याय मा प्रमदः" (स्व-अध्ययन के प्रति कभी भी लापरवाही न करें)।
- पतंजलि ने इसे चौथे नियम के रूप में सूचीबद्ध किया है (योग सूत्र II.32)।

अभ्यास में: प्रत्येक सुबह, एक संकल्प लें – एक गुण जिसे आप आज अपनाएंगे (धैर्य, ईमानदारी, उदारता)। प्रत्येक शाम, पांच मिनट शांतिपूर्वक चिंतन करें: क्या मेरी वाणी संयमित थी? क्या मैंने इच्छा से प्रेरित होकर कार्य किया या कर्तव्य से? प्रति सप्ताह एक लिखित प्रश्न लिखें: "इस सप्ताह मेरा विवेक (धी) कहाँ विफल रहा?"

2. वाणी का अनुशासन – वाक् शुद्धि

- विदुर नीति 5.36 में, विदुर वाणी को आत्म-विनाश का सबसे खतरनाक साधन बताया गया है। भगवद् गीता 17.15 में इसे वाणी की तपस के रूप में औपचारिक रूप दिया गया है: " अनुद्वेग-करं वाक्यम्", यानी ऐसी वाणी जो उत्तेजित न करे।
- मनुस्मृति में वाणी के चार विकारों का उल्लेख है: झूठ, कठोरता, निंदा और व्यर्थ की बातें।

पौरुष्यमनृतं चैव पशून्यं चापि सर्वशः।

असम्बद्धप्रलापश्च वाङ्मयं स्याच्चतुर्विधम् ॥

व्यवहार में: कोई भी महत्वपूर्ण कथन कहने से पहले, तीन बातों पर विचार करें: क्या यह सच है, क्या यह आवश्यक है, और क्या यह विनम्रतापूर्ण है? प्रतिक्रियात्मक भाषण देने से पहले जानबूझकर रुकने की आदत डालें। विशेष रूप से इन चार बातों से बचें: सरासर झूठ, अनुपस्थित व्यक्ति के बारे में गपशप, आत्म-प्रशंसा और किसी को ठेस पहुंचाने वाले शब्द।

3. धार्मिक दैनिक आचरण – आचार

- अध्याय 33-36 में विदुरा की सलाह मूल रूप से एक गृहस्थ की संहिता है: भोर से पहले उठो, पंच महायज्ञों (देवताओं, पूर्वजों, अतिथियों, सभी प्राणियों और ऋषियों के प्रति दैनिक कर्तव्यों) को पूरा करो, और केवल न्यायसंगत साधनों से ही कमाओ।

व्यवहार में: ब्रह्म मुहूर्त (लगभग सुबह 3:00 से 5:00 बजे तक) केवल तपस्या का समय नहीं है, बल्कि वह समय है जब संसार चेतना पर हावी नहीं होता। इस समय में बिना किसी स्क्रीन के बीस मिनट ध्यान करने से दिन भर के निर्णय लेने की प्रक्रिया में एक नया आयाम जुड़ जाता है। पंच महायज्ञों में क्रमशः आत्मचिंतन, वंश के प्रति कृतज्ञता, आतिथ्य सत्कार, पर्यावरण संरक्षण और शास्त्रों का ज्ञान शामिल हो सकते हैं।

4. भेदभाव का विकास – धी

विदुर नीति (उद्योग पर्व 1.1-5) के सभी श्लोक धी के विषय को समर्पित हैं, जो कि शाश्वत और तत्काल ध्यान देने योग्य बातों के बीच अंतर करने की शक्ति है।

कथा उपनिषद 1.3.3 आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु। [7]

बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च ॥

इसमें रथ की उपमा का प्रयोग किया गया है: बुद्धि सारथी है, और सारथी चलाने की कला में प्रशिक्षण के बिना, इंद्रियाँ (घोड़े) आपको मार्ग से हटाकर खाई में गिरा देंगी। भगवद् गीता 2.41

व्यवसायआत्मिका बुद्धिरेकेह कुरुन्नंदन।

बहुशाखा ह्यन्नताश्च बुद्धयोऽव्यवसायिनाम् ॥

बुद्धिमानों का धी एकाग्रचित्त और दृढ़ होता है।

क्रियात्मक अभ्यास: जानबूझकर ऐसे व्यक्तियों की संगति में रहें जिनकी बुद्धि आपसे कहीं अधिक हो (सत्संग)। विदुर द्वारा वर्णित छह आंतरिक शत्रुओं को पहचानें: काम (वासना), क्रोध (क्रोध), लोभ (लालच), मोह (भ्रम), मद (अभिमान) और मत्सर (ईर्ष्या)। कोई भी बड़ा निर्णय लेने से पहले, सचेत रूप से स्वयं से प्रश्न करें: क्या इससे मुझे दस वर्षों तक लाभ होगा या केवल दस मिनटों के लिए?

5. विपत्ति में संयम — स्थितप्रज्ञ

वास्तव में, विदुर स्वयं महाभारत में लगातार इस गुण का प्रदर्शन करते हैं: वे सत्ता के सामने निडरता से बोलते हैं, बिना किसी नाराजगी के हाशिए पर धकेल दिए जाने को स्वीकार करते हैं, और राजा को खुश करने के लिए अपनी सलाह में कोई मिलावट नहीं करते।

भगवद् गीता 2.55

प्रजाहति यदा कामान्सर्वन्पार्थ मनोगतान |

आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्राज्ञस्तदोच्यते ||

यह कृति भारतीय साहित्य में इस गुण का सबसे संपूर्ण चित्रण प्रस्तुत करती है, वह व्यक्ति जिसकी खुशी भीतर में निहित है, जो न तो प्रशंसा से प्रसन्न होता है और न ही निंदा से कुचल जाता है।

व्यवहार में: अपमानित या तनावग्रस्त होने के बाद कुछ क्षण के लिए प्रतिक्रिया न दें; इसका सबसे सरल तरीका है प्रतिक्रिया देने से पहले तीन गहरी सांसें लेना। यह सोचने की क्षमता विकसित करें कि आप किन चीजों को नियंत्रित कर सकते हैं और किनको नहीं। अपने व्यवहार के आधार पर खुद को महत्व दें, न कि अपनी स्थिति या सफलता के आधार पर।

आधुनिक नेता और विदुरा नीति

विदुरा ने अपनी विदुरा नीति में प्रशासन और नैतिकता दोनों पर गहन अंतर्दृष्टि प्रदान की है। विभिन्न प्रकार के दुर्गुणों का उल्लेख होने के बावजूद, विदुरा की शिक्षाओं के अनुसार, नेता को निम्नलिखित चार दुर्गुणों से बचना चाहिए: राजा (नेता) के चार प्रमुख दुर्गुण।

- अपशब्द: इसमें अपशब्द या अपमानपूर्ण भाषा का प्रयोग शामिल है। विदुरा के अनुसार, भले ही हथियार से लगा घाव भर जाए, लेकिन शब्दों का घाव कभी ठीक नहीं हो सकता।
- दंड में क्रूरता: किसी को उसकी योग्यता से अधिक दंड देना। यह स्पष्ट है कि इस प्रकार से जनता को दंडित करने से राजा उनकी सारी वफादारी खो देगा।
- संसाधनों का दुरुपयोग : धन की बर्बादी।
- सद्गुणों का त्याग : जब कोई व्यक्ति किसी गुणी व्यक्ति के प्रति ईर्ष्या या द्वेष की भावना से प्रेरित होकर कार्य करता है। जो नेता दूसरों की सफलता को सहन नहीं कर पाता या धर्म का त्याग नहीं करता, वह अंततः अपने ही पतन का कारण बनता है।[7]

एक नेता को इन लक्षणों से दूर क्यों रहना चाहिए?

विदुर के अनुसार, आत्मजयी ही भूजयी, यानी पृथ्वी का विजेता बनने में सक्षम है। उनका तात्पर्य यह है कि यदि कोई व्यक्ति अपनी वाणी या धन का प्रबंधन करने में विफल रहता है, तो उसके लिए किसी राज्य या संगठन का प्रबंधन करना भी कठिन होगा।

निष्कर्ष

विदुरणीति भारत की प्राचीन सभ्यता का शाश्वत ज्ञान है जो नैतिक राजनीति, आत्म–अनुशासन और सामंजस्यपूर्ण जीवन के लिए आज भी प्रासंगिक है। प्रौद्योगिकी की प्रगति, वैश्विक राजनीति की जटिलताओं और इक्कीसवीं सदी से जुड़ी नैतिक अनिश्चितताओं के बावजूद, विदुर की शिक्षाएं सद्गुण, विनम्रता और दूसरों की सहायता के प्रति समर्पण की शक्ति की याद दिलाती हैं।[6,7]

विदुरनीति की शिक्षाओं की ओर लौटने से समकालीन नेताओं और विचारकों को निर्णय लेने का एक मूल्यवान साधन प्राप्त होता है जो यथार्थवाद पर आधारित होते हुए भी धर्म के सिद्धांतों के अनुरूप है। यह कोई पुरातन वस्तु नहीं, बल्कि ज्ञान का एक गतिशील भंडार है जो हमें अपने सभी कार्यों और संबंधों में ज्ञान की खोज करने, न्याय को बढ़ावा देने और करुणा को पोषित करने के लिए प्रेरित करता है। ऐसा करके, हम विदुर की विरासत का सम्मान करते हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए नैतिक रूप से सही जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

संदर्भ

1. विदुर नीति (महाभारत – उद्योग पर्व)। (2023)। गीता प्रेस. (मूल कार्य चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में प्रकाशित)
2. महाभारतः खंड 4 (बी. देबरॉय, अनुवादक)। (2015)। पेंगुइन बुक्स। (मूल कृति लगभग चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में प्रकाशित हुई थी)
3. सामान्य दावों के लिएः (महाभारत, लगभग चौथी शताब्दी ईसा पूर्व/2023)
4. "पंडिता" परिभाषा के लिए (धारा 1): (महाभारत, लगभग चौथी शताब्दी ईसा पूर्व/2023, उद्योग पर्व 33.2)
5. “छह बुराइयों” के लिए (खंड 2): (महाभारत, लगभग चौथी शताब्दी ईसा पूर्व/2023, उद्योग पर्व 33.38)
6. विदुर पंडित को ऐसे व्यक्ति के रूप में परिभाषित करते हैं जो वातावरण या भावनाओं की चरम सीमाओं से अप्रभावित रहता है (महाभारत, लगभग चौथी शताब्दी ईसा पूर्व/2023, उद्योग पर्व 33.2)। समभाव की यह अवस्था उच्च स्तर की शारीरिक लचीलेपन का संकेत देती है, जिसे आधुनिक विज्ञान इष्टतम वेगस टोन के रूप में वर्णित करता है।

7. खिरावधी — विदुर, ज्ञान और धर्मः https://khirawdhi.com/vidura-the-embodiment-of-wisdom-and-righteousness-in-the-mahabharata/